अंक - 8
जनवरी 2024

वीथिका ई पत्रिका

संस्कृति, साहित्य, कला, विज्ञान

||श्री राम||

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा।
हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥

WWW.VITHIKA.ORG

वीथिका ई पत्रिका

संपादक मंडल

अर्चना उपाध्याय	चित्रा मोहन	सुमित उपाध्याय
प्रधान संपादक	मुख्य सलाहकार संपादक	प्रबंध संपादक

वीथिका परिवार

संरक्षक समिति
प्रो. विनय मिश्र
प्रो. प्रभाकर सिंह
डॉ. बिपिन कुमार मिश्र

वरिष्ठ सलाहकार संपादक
डॉ. आशुतोष तिवारी

वरिष्ठ सह संपादक
डॉ. सुधांशु लाल

वेब डिज़ाइन
रोशन भारती

प्रकाशक
उज्जवल उपाध्याय
यशिका फाउंडेशन, मऊ

संपादकीय समिति

डॉ मोहम्मद ज़ियाउल्लाह
डॉ अरुण कुमार सिंह
डॉ धनञ्जय शर्मा
श्री मनोज कुमार सिंह
एड. सत्यप्रकाश सिंह
श्री बृजेश गिरि
श्री नन्दलाल शर्मा

कवर पेज संपादक
पूजा मद्धेशिया

कार्टून संपादक
कृतिका सिंह

सलाहकार परिषद
डॉ अखिलेश पाण्डेय
डॉ शिवमूरत यादव
अर्चिता उपाध्याय

UDYAM-UP 55 0010534

vithikaportal@gmail.com

www.vithika.org

वीथिका ई -पत्रिका

पत्रिका में छपे सभी लेख लेखक के अपने विचार हैं

वीथिका

आपकी वीथिका

अंक 08

जनवरी , 2024

प्रभु श्री राम - चित्र	पूजा मद्धेशिया	04
गलियों की बात	सम्पादकीय	05
रमणे कणे-कणे इति राम	अर्चना उपाध्याय	06
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	मनोज कुमार सिंह	08
वाल्मीकि के मर्यादा पुरुषोत्तम राम	जय नारायण मिश्र	12
हम सबके राम	कुँवर तुफान सिंह “निकुम्भ”	14
राम चरित मानस में विरह भक्ति और समर्पण	सुमित उपाध्याय	16
जिन्ह मोहिं मारा तें मैं मारे	अनु	20
राम-सीता संवाद	कार्टूनिस्ट कृतिका सिंह	21
भूटान यात्रा : संस्मरण	डॉ. नमिता राकेश	22
भाषा - नेईलुन अप्तदा	डॉ सुधांशु लाल	26
प्रभु श्री राम काव्य वीथी दयाशंकर तिवारी, डॉ नमिता राकेश, अविनाश पाण्डेय		27
कहानी	प्रो डॉ. रचना सिंह “रश्मि”	30

मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की
गति कूर कबिता सरित की ज्यों सरित पावन नाथ की

गोस्वामी संत तुलसीदास जी महाराज

चित्रकार - पूजा मद्धेशिया जी

जय श्री राम

जय श्री राम

जय श्री राम

गलियों की बात

जनवरी, 2024

अर्चना उपाध्याय
प्रधान संपादक

किसी भी देश के उत्थान,उसके क्रमगत विकास में वहां की सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, कलाकृति आदि तमाम पहलूओं का विशेष योगदान होता है । भारत के मंदिर भारतीय स्थापत्य, कला, सभ्यता, संस्कृति की पहचान व शान हैं । हमारा समाज, पर्व, जीवन सब कुछ इन मंदिरों पर ही केन्द्रित है । अयोध्या में प्रभु श्री राम के मंदिर की स्थापना व उदघाटन के शुभ अवसर पर वीथिका ई पत्रिका का यह जनवरी अंक " श्री राम विशेषांक " के रूप में भारतीय जनमानस की आस्था के केंद्र प्रभु श्री राम के चरणों में समर्पित है ।

अयोध्या में मन्दिर का पुनर्निमाण हमारे देशवासियों के धर्म व सत्य का ही आदर्श रुप को मान्यता देने का संकल्प है । अयोध्या के राम ने अपने आदर्श गुण,चरित्र,मर्यादा का आजीवन पवित्रता से पालन करते हुए देश,समाज,परिवार व नैतिक मूल्यों की रक्षा की है।

आप सबको वीथिका ई पत्रिका की ओर से नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

" रमणे कणे-कणे इति राम "

अर्चना उपाध्याय
मुख्य संपादक
एवं समाजसेवी

यही हैं श्री विष्णु के दसवें अवतार माने जाने वाले "अयोध्या"के श्री राम जी जो कण-कण में बसते हैं । संविधान के तीसरे भाग में जहां आम हों या खास सभी नागरिकों के लिए एक समान मौलिक अधिकारों की चर्चा है, वहां प्रभु श्री राम जी का ही सुन्दर चित्र अंकित है। एक अनपढ़ भी श्री राम जी के आदर्श चरित्र, न्यायप्रिय,मर्यादापुरुष, गुणवान, दृढ़प्रतिज्ञ, सदाचारी, वीर्यवान, धैर्य, मन पर नियन्त्रण,कान्तिवान, विद्वान, धर्मज्ञ, समर्थवान,नैतिक, कुशल राजनीतिज्ञ, सामाजिक, पारिवारिक आदि अनेकानेक गुणों की सरल भाषा में अकाट्य तर्क प्रस्तुत कर श्रीराम की विशेषता व प्रभुता साबित कर सकता है।

विद्वता के साथ नम्रता को राम ने आजीवन धारण किया है किन्तु अन्याय के खिलाफ प्रभु श्री राम जी ने जनहित में अपना सर्वस्व दांव पर लगा दिया है।

पिता द्वारा राज्याभिषेक की घोषणा के पश्चात ये राम ही हैं जो "अन्य भाईयों के लिए क्या?" इसकी चिन्ता करके बड़े भाई का धर्म, संयुक्त परिवार का अग्रज व भाईयों से अथाह प्रेम को प्रदर्शित करते हैं। मां कैकयी की इच्छा व पिता के आदेश से तपस्वी वेश में 14 वर्ष वनवास को बिना प्रश्न के सर झुकाकर सहर्ष स्वीकार करना तथा माता कौशल्या से आज्ञा लेकर यह कहना कि पिता उन्हें किसी बड़े कार्य के लिए भेज रहे हैं, यह शिक्षा देता है कि हमारी संस्कृति में माता-पिता, बड़ों का सर्वोच्च स्थान है और इनकी इच्छा के अनुसरण में भलाई निहित है।

सीता को अयोध्या में ही रुककर माताओं की सेवा हेतु समझाने वाले राम आज की पीढ़ी के लिए एक संदेश प्रस्तुत करते हैं जो विवाह के बाद ही परिवार से अलग रहना पसन्द करते हैं।

वनगमन के समय जब अयोध्या की सीमा शृंगवेरपुर तक समस्त अयोध्यावासी विकल होकर साथ पहुंचाने जाते हैं तो आह रे राम का नगरवासियों के प्रति प्रेम व करुणा की पराकाष्ठा कि रात के अंधेरे में सबको सोता छोड़कर मन्त्री सुमन्त के साथ स्थान छोड़ देते हैं ताकि वो लोग अधीर न हों।

श्री राम - जय राम

ऐसे ही वन में निषादराज से दोस्ती, हनुमान जी को सर्वाधिक प्रिय बनाना, शबरी के झूठे बेर खाना, राम सेतु बनाते वक्त सकल वनवासियों, जनजातियों,पशु-पक्षियों को एकत्रित करना उनके विशाल व सम्यक, समान दृष्टिकोण को अपनाते हुए दर्शाता है कि राम ने सभी को एक समान समझा,एक समान व्यवहार अपनाया, बिना किसी लिंग भेद, जाति भेद के समतामूलक समाज की परिकल्पना व सार्थकता हमने राम राज्य में ही पाया है।

विरोधी पक्ष से शरण में आए को भी पहले सुनने व फिर उसके आदर्श गुणों के कारण अपनाने का साहस सिर्फ राम में ही है। जब विभिषण मिलने आते हैं और सुग्रीव संशय प्रकट करते हैं तो प्रभु राम मुस्कुराते हुए पहले आगंतुक को सुनने की सीख देते हैं। इससे बड़ा लोकतन्त्र का उदाहरण हमें कहां मिलेगा जहां हर जीव-जंतु, मनुष्य को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता हो ।

इसी तरह शबरी के जूठे बेर को खाकर राम हमें भेद-भाव से रहित,प्रेम की सर्वोच्चता को स्वीकारने की सीख देते हैं।

इसी तरह आजीवन एक पत्नि-प्रेम व विवाह को निभाते हुए राम ने हमारी भारतीय संस्कृति व सभ्यता का परिचय व निभाने की मर्यादा का उदाहरण दिया है। विवाह जैसी सुन्दर संस्था के महत्व का निर्माण किया है।

घायल रावण की मृत्यु से पूर्व लक्ष्मण को विद्वान रावण से कुशल राजनैतिक व सामाजिक ज्ञान के लिए भेजते हुए राम ने सबसे अलग विशाल हृदय, एक ज्ञानी का दुसरे ज्ञानी की स्वीकार्यता का अद्भुत शिक्षा दी है कि ज्ञान हमें जहां से भी मिले उसे ग्राह्य करना ही विद्वता से नम्रता को सार्थक करता है।

अर्थात प्राचीनकाल से लेकर आज भी कुशल राजनीतिज्ञ, आदर्श पारिवारिक प्रेम, नैतिक मूल्यों की रक्षा, सामाजिकता के निर्वाह, सबके प्रति समान निस्वार्थ भाव, चरित्रवान, मधुर व प्रिय बोली-आचरण वाले कोमल राम, दूसरी तरफ न्याय पालन हेतु उतने ही सख्त राम ने जनहित में स्वयं हित की सर्वदा बलि दी है।
राम पहले थे, आज हैं और हमेशा रहेंगे।

“मर्यादा पुरुषोत्तम राम”

मनोज कुमार सिंह
लेखक/साहित्यकार/उप-सम्पादक
कर्मश्री मासिक पत्रिका

लंका नरेश लंकेश को पराजित करने के उपरांत चौदह वर्षीय वनवासी जीवन की अनुभूतियों की थाती को हृदय में समाहित किये हुए वापस अयोध्या आकर जिन सिद्धांतों और विचारों के आधार पर मर्यादा पुरुषोत्तम ने शासन व्यवस्था स्थापित किया उसे समृद्ध भारतीय साहित्य और चिंतन परम्परा में "राम-राज्य "के नाम से जाना समझा जाता हैं । भारतीय साहित्य और राजनीतिक चिंतन परम्परा में वर्णित राम-राज्य को आधुनिक दौर में वर्णित और कुछ देशो में प्रचलित कल्याणकारी राज्य के समतुल्य माना जाता है। इस दृष्टि से मर्यादा पुरुषोत्तम राम भारतीय वसुन्धरा पर प्रथम कल्याणकारी राज्य के प्रवर्तक और संस्थापक माने जाते हैं।

लंका नरेश लंकेश को पराजित करने के उपरांत चौदह वर्षीय वनवासी जीवन की अनुभूतियों की थाती को हृदय में समाहित किये हुए वापस अयोध्या आकर जिन सिद्धांतों और विचारों के आधार पर मर्यादा पुरुषोत्तम ने शासन व्यवस्था स्थापित किया उसे समृद्ध भारतीय साहित्य और चिंतन परम्परा में "राम-राज्य "के नाम से जाना समझा जाता हैं। भारतीय साहित्य और राजनीतिक चिंतन परम्परा में वर्णित राम-राज्य को आधुनिक दौर में वर्णित और कुछ देशो में प्रचलित कल्याणकारी राज्य के समतुल्य माना जाता है। इस दृष्टि से मर्यादा पुरुषोत्तम राम भारतीय वसुन्धरा पर प्रथम कल्याणकारी राज्य के प्रवर्तक और संस्थापक माने जाते हैं।

वस्तुतः मर्यादा पुरुषोत्तम राम के हृदय में चौदह वर्षीय वनवासी जीवन की भूख, प्यास, तड़प और वनवासी लोगों के जीवन जीने की चुनौतियों से साक्षात्कार के फलस्वरूप प्राप्त अनुभूतियों ने लोक मंगल और लोक रंजन पर आधारित एक आदर्श राज्य स्थापित करने की सूझ-बूझ और चेतना प्रदान किया । पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन परम्परा में इंग्लैंड के विद्वान विचारकों जेम्स मिल, जरमी बेंथम और जान स्टुअर्ट मिल ने "अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख" के सिद्धांत पर आधारित शासन व्यवस्था को कल्याणकारी राज्य के रूप में प्रतिपादित किया । मर्यादा पुरुषोत्तम राम द्वारा संचालित राम-राज्य निश्चित रूप से पाश्चात्य विचारकों द्वारा प्रतिपादित कल्याणकारी राज्य से श्रेष्ठ, उत्तम और व्यापक रूप से स्वीकार्य था। क्योंकि इसमें अधिकतम लोगों के कल्याण के बजाय सबके कल्याण को महत्व दिया गया था। इसका प्रमाण महाकवि तुलसीदास की रचनाओं में स्पष्ट रूप से मिलता है। तुलसीदास ने रामचरित मानस में राम-राज्य का उल्लेख करते हुए लिखा है कि- "दैहिक , दैविक भौतिक तापा, रामराज काहू नहीं व्यापा।” । वस्तुतः राम राज्य और कल्याणकारी राज्य में मौलिक अंतर यह है कि- कल्याणकारी राज्य का उद्भव उदारवादी पूंजीवादी माडल की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हुआ। इसकी अवधारणा के अनुसार सरकार लोगों के जीवन में न्यूनतम हस्तक्षेप करेंगी और सरकार का कार्य केवल कानून व्यवस्था बनाएं रखते हुए लोगों के जीवन, सम्पत्ति और स्वतंत्रता की रक्षा करना हैं। इसकी प्रतिक्रया के फलस्वरूप उत्पन्न कल्याणकारी राज्य की अवधारणा के अनुसार सरकार को लोगों का जीवन स्तर उपर उठाने के लिए सक्रिय और सकारात्मक हस्तक्षेप करना चाहिए। इसके विपरीत राम राज्य का उद्भव उन कष्टदायक संघर्षमयी अनुभवों और अनुभूतियों के फलस्वरूप हुआ था जिनको वनवासी जीवन के दौरान राम ने झेला था या साक्षात्कार किया था। यातना, कष्ट और जीवन जीने की चुनौतियों के अनुभवों से शासन व्यवस्था के लिए आई समझदारी और परिपक्वता के फलस्वरूप उत्पन्न राम-राज्य का स्वरूप स्वाभाविक रूप से प्रतिक्रिया के फलस्वरूप उत्पन्न कल्याणकारी राज्य के स्वरूप से बेहतर और व्यापक रूप से स्वीकार्य था। एक कल्याणकारी राज्य का उद्देश्य न केवल राज्य के लोगों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना है बल्कि विविध प्रकार के भेद-भावों पर आधारित रूढ़ियों और परम्पराओं को मिटा कर प्रत्येक व्यक्ति को

गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना होता हैं। वनवासी जीवन के दौरान मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने विसंगतियों से भरी रुढियों और परम्पराओं को मिटाकर नई मर्यादाओं को स्थापित करने का श्लाघनीय प्रयास किया। भक्त वत्सल श्रीराम ने शबरी की जूठी बेर खाकर अपने समय की छुआ-छूत जैसी घिनौनी प्रथा पर करारा प्रहार किया और यह भेदभाव रहित समाज बनाने की दिशा में उठाया गया आवश्यक क्रांतिकारी कदम था । राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वाधीनता संग्राम के दौरान यह महसूस किया कि- हमारे समाज में एक बड़ी आबादी सदियो से छुआ-छूत जैसी घृणित कुप्रथा का शिकार हैं और सदियों से पददलित, पदक्रमित और तिरस्कृत यह आबादी सामाजिक बहिष्कार का दंश झेल रही हैं। भारतीय सामाजिक संरचना का विश्लेषण करते हुए प्रख्यात समाजशास्त्री श्रीनिवासन ने कहा था कि-"भारतीय समाज विश्व का सर्वाधिक विश्रृखंलित, विभाजित, विखंडित और श्रेणीबद्ध *(Higherarical)* समाज है।" इन समस्त विकृतियों को समाप्त किए बिना हम स्वस्थ्य समरस और सशक्त भारत का निर्माण नहीं कर सकते हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम और शबरी के संबंधों को स्मरण करते हुए हम बढ़ती सामाजिक कड़वाहट को रोक सकते हैं। वनगमन के दौरान दुर्गम, कंकड़ीले-पथरीले रास्तों पर चलते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने उत्कट परोपकार की भावना का परिचय देते हुए घायल जटायु को गले लगाया। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने जटायु की व्यथा-वेदना को जिस तत्परता और तल्लीनता से सुनने, समझने और दूर का प्रयास किया वह आज भी राह में पडें घायल दीन-दुखियो की सेवा -सुशुश्रा करने का अद्वितीय और वर्तमान दौर में कल्याणकारी राज्य का दावा करने वाली सरकारों के लिए प्रेरणा ग्रहण कर योग्य उदाहरण है। क्योंकि- कल्याणकारी राज्य की यह मूलभूत विशेषता है कि- सरकार समाज के कमजोर वर्ग के लोगों को उपर उठाने के लिए आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित करेगी। आज सडकों से लेकर गांव की पगडंडियो पर आते-जाते लोगों की रफ्तार इतनी तेज है कि सडक पर घायल अवस्था में पडे बुढे-बुजुर्ग और अपाहिजो को लोग अनदेखा कर देते हैं। आज हम सडक पर शरारती तत्वों द्वारा किसी सज्जन के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार या किसी महिला के साथ आम सडक पर होती अशिष्टता और अभद्रता के दृश्य के महज तमाशबीन बनकर रह गये हैं या अधिक से अधिक सूचना प्रौद्योगिकी के आधुनिकतक हाइटेक औजार के माध्यम से सेल्फी लेने में मशगूल रहते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम राम द्वारा घायल जटायु को गले लगाने का अनुपम उदाहरण हमें सामाजिक सरोकारों के लिए प्रेरित करता है और उत्तरदायी बनाता है। इस उदाहरण से हम समाज के सामूहिक दुख दर्द से स्वयं को जोड़कर शरारती तत्वों और मनचलों द्वारा की जाने वाली असामाजिक गतिविधियों और प्राय: सडक पर होने वाले सामूहिक दुष्कर्मो और दुर्व्यवहारो को रोक सकते है । मर्यादा पुरुषोत्तम राम स्वस्थ्य, मर्यादित और अनुशासित स्त्री-पुरुष संबंधों की आवश्यकता और महत्ता के प्रति संवेदनशील थे। मर्यादित रिश्तों-नातों की बुनियाद पर टिका हुआ

समाज कभी अराजक नहीं होता और उस समाज का नैतिक मनोबल ऊंचा रहता हैं। इसलिए अपने छोटे भाई सुग्रीव की धर्मपत्नी के साथ दुराचरण के दोषी बालि का वध करने से भी राम ने परहेज नहीं किया। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने बालि का वध कर रिश्तों-नातों और सामाजिक संबंधों की मर्यादा स्थापित करने का श्लाघनीय कार्य किया। नारी सशक्तिकरण, नारी सम्मान और नारी सुरक्षा कल्याणकारी राज्य का अनिवार्य तत्व है।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा के प्रति सर्वदा सजग और सचेत रहे। राम ने गौतम ऋषि द्वारा परित्यक्त लगभग जड़वत हो चुकी अहिल्या को गरिमा सहित अधिकार वापस दिलाया और ससम्मान गौतम ऋषि से मिलन कराकर नारी अस्मिता को नये सिरे से परिभाषित करने का अद्वितीय प्रयास किया । अपने सम्पूर्ण वनवासी जीवन की दुर्गम यात्रा में मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने विविध मूल्यों, मान्यताओ और मर्यादाओं को स्थापित किया जो हमारे सामाजिक जन जीवन में आज भी अनुकरणीय और अनुसरणीय हैं। इन मूल्यों, मान्यताओं और आदर्शों पर स्थापित राम-राज्य को गहराई से समझने का प्रयास किया जाय तो निश्चित रूप से एक श्रेष्ठ और उत्तम कल्याणकारी राज्य स्थापित करने में सहायता मिल सकती है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम द्वारा स्थापित राम राज्य में एक आदर्श कल्याणकारी राज्य के सारे सिद्धांत समाहित है जिसको जमीन पर उतारने का प्रयास हर शासक को करना चाहिए।

वाल्मीकि के मर्यादा पुरुषोत्तम राम

पारिवारिक, सामाजिक, नैतिक और राजकीय मर्यादा में रहकर भी पुरुष उत्तम किस तरह हो सकता है यह “मर्यादा पुरुषोत्तम” राम का जीवन हमें समझाता है। स्वयं को मानव कहने वाले राम देवकोटि में कैसे पहुंच गये। यह रामायण दर्शाती है। राम में देवत्व स्वयं राम ने निर्माण किया था । विकारों, विचारों व व्यवहार में राम ने मानव-मर्यादा नहीं छोड़ा, इसलिए वे “मर्यादा पुरुषोत्तम” कहलाते हैं।

मानवजाति राम बनने का ध्येय और आदर्श रखे इसलिए महर्षि वाल्मीकि ने राम का चरित्र-चित्रण किया| सद्गुणों का शिखर और उसका समुच्चय अर्थात् राम । 'राम के गुण अपने में लाकर मैं राम बनूंगा' ऐसी महत्वाकांक्षा प्रत्येक मानव के मन में निर्माण करने के लिए ऋषि वाल्मीकि ने लेखनी उठायी। जिसे राम बनने की इच्छा हो, जिसे नर से नारायण बनने की इच्छा हो, उसे राम का एक-एक गुण लेकर उसे आत्मसात् करना चाहिए। ऐसा स्वयं का निर्माण करनेवाला व्यक्ति

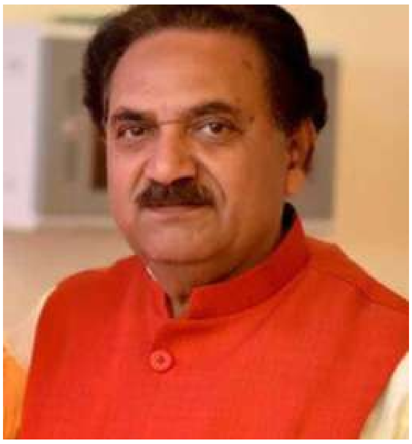

जय प्रकाश नारायण मिश्रा
प्रयागराज

सचमुच “राम” बनकर “राम” की पूजा करेगा'।

राम चार भाई थे परन्तु उनमें कभी भी विवाद हीं हुआ क्योंकि “त्याग में आगे और भोग में पीछे” यह उनका जीवन-मंत्र था । स्वार्थत्याग की पराकाष्ठा अर्थात् राम । राम की मातृ-पितृभक्ति अनुकरणीय है। वन जाने की पिता की आज्ञा का लेशमात्र दुःख नहीं । राज्याभिषेक की बात सुनने पर या वन जाने का आदेश स्वीकारते समय राम के चेहरे के भाव दोनों परिस्थितियों में समान थे। पिता का शब्द तत्काल मान्य किया । ऐसी प्रसन्नता अर्थात् राम। प्रभातकाल में पांच बजे से सात बजे तक के समय को राम की याद में 'राम प्रहर' इसीलिए कहा जाता है।

जिस कैकेयी माता के कारण यह प्रसंग उपस्थित हुआ उसी माता को वन प्रस्थान करते समय, विदा-आज्ञा लेते समय आदर पूर्वक प्रणाम कर कहते हैं, “मुझे वन-गमन की आज्ञा दो मां ।” यह घटना राम के चरित्र की भव्यता का दर्शन कराती है। राम का प्रजा पर प्रेम और प्रजा का राम पर प्रेम अद्‌भुत था। ' राम-सुग्रीव मित्रता आदर्श थी । “तुम्हारे जैसा मित्र शायद ही हो”, ऐसा राम ने सुग्रीव के लिए कहा था। सुग्रीव को जरा भी दुख होता था तो राम की आंखों में आंसू आ जाते थे। “राम ने सरयू में प्रवेश कर जगत से अंतिम विदा ली” यह समाचार सुनकर सुग्रीव किष्किन्धा से दौड़े चले आए और राम ने जहां सरयू में जल समाधि ली थी, वहीं स्वयं भी जल-समाधि ले ली। ऐसी मित्रता दुर्लभ है। मारीच ने कहा था, “मित्र मिले तो राम जैसा, शत्रु मिले तो राम जैसा।”

रावण का अंतिम संस्कार करने से विभीषण के मना करने पर राम ने कहा, “विभीषण ! मृत्यु के साथ बैर समाप्त हो जाता है। रावण का अंतिम संस्कार तूं नहीं करेगा तो मैं करूंगा। वह जैसे तेरा भाई था वैसे ही मेरा भाई भी है।”

हम सबके राम

कुँवर तुफान सिंह निकुम्भ
युवा कवि व साहित्यकार, मऊ

राम हमारे मूल है और मूल को परिभाषित करना उतना कठिन कार्य होता है जैसे सूरज को दीपक दिखाना । राम सर्वव्यापी हैं वह संसार के कण-कण में विराजमान हैं, राम जीवनयापन का एक सिद्धांत है जिस प्रकार सिद्धांतविहीन मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं रहता ठीक उसी प्रकार राम के बगैर इस सकल ब्रम्हांड में जीवन का कोई मूल्य नहीं। राम एक ऐसे प्रकाश पुंज है जिसके उजाले में जीवनयापन करना बहुत ही सुन्दर और सुगम हो जाता है, परन्तु इस प्रकाश से विरले ही प्रकाशित हो पाते हैं ।

इस प्रकाश से प्रकाशित होने के लिए राम शब्द के शाब्दिक अर्थ को समझना अतिआवश्यक है जिसे मैंने ज्ञानार्जन के माध्यम से जो प्राप्त किया

राम शब्द में "रा" का अर्थ होता है- "आभा" और "म" का अर्थ होता है- "मैं"

राम अर्थात जो संपूर्ण सृष्टि पर अपने औरस पुत्रों के समान, सब पर समान प्रेम और स्नेह कि बारिश करते हो यदि उतने के बाद भी आप राम रसपान करने से वंचित रह जाते हैं तो आपको स्वयं में आत्मचिंतन कि आवश्यकता है। एक बार महात्मा गांधी ने कहा था "आप मेरा सब कुछ ले लीजिये, मैं तब भी जीवित रह सकता हूँ । परन्तु यदि आपने मुझसे राम को दूर कर दिया तो मैं नहीं रहा सकता।"

राम आपको हर रुप में मिल जाएंगे यथा दशरथ के राम, कैकई के राम, कौशल्या के राम, भरत के राम, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के राम, सीता के राम, जटायु को पिता स्वरुप स्नेह करने वाले राम, भाई समान स्नेह करने वाले हनुमान के रामऔर मित्र धर्म का पालन करते राम के रूप में या निषाद राज के बालसखा के प्रेम में विभोर राम ।यह आप पर निर्भर करता है कि आप किस रुप में राम को अपना बनाना चाहते हैं और राम मय होना चाहते हैं।एक नाम रुप अनेक और अनेक रुप और एक राम,

"भरतु प्रानप्रिय पावहीं राजू।
बिधि सब विधि मोहि सनमुख आजू।।"

राम अर्थात त्याग की प्रतिमूर्ति जिन्होंने अपने कुल की मर्यादा को बचाने के लिए यह कहते हुए सिंहासन का परित्याग कर दिया कि यदि मेरे वन जाने से प्राणप्रिय भरत भैया को राजसिंहासन मिलता है तो ऐसा कोई अभागा और अज्ञानी ही भाई होगा जो वन के बजाय राजसिंहासन पर बैठना चाहेंगा।

त्याग और निश्छल प्रेम में वशीभूत राम ने अपने जीवन में अनेकों बार ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए जिनको कम शब्दों में परिलक्षित कर पाना मुश्किल ही

नहीं नामुमकिन सा लगता है। ऐसे ही उन्हें नहीं पुरुषों में उत्तम पुरुषोत्तम कहा गया है।

राम एक ऐसे भूलभुलैया के समान है कि आप जितना राम को जानने का प्रयास करेंगे राम को आप और उतना ही बड़ा होता हुआ पायेंगे।राम को लिखना इतना आसान नहीं, आप किस राम को परिभाषित करेंगे। राम को परिभाषित करने के लिए आपको वास्तव में एक साधक बनना पड़ेगा तभी राम को लिखना संभव है ।

"यदि राम को लिखना इतना आसान होता तो आज हर कोई तुलसीदास होता"

आज के इस बदलते युग में राम का अनुगामी बनना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि राम जीवन का मूल है, आज के समाज में अनवरत हो रहें मूल्यों के क्षरण को रोकने का एक मात्र मार्ग केवल व केवल राममय होना ही है । परन्तु आज के समाज के भयावह असंतुलित आचरण से निजात पाने के लिए सबसे उत्तम और सर्वथा उचित कार्य है राम को आत्मसात करना।

रामचरित मानस में विरह, भक्ति और समर्पण

सुमित उपाध्याय

प्रबंध संपादक, वीथिका ई पत्रिका

सगुण भक्तिकाव्य धारा की कालजयी रचना महाकवि तुलसीदास विरचित "रामचरित मानस" में तुलसी दास जी ने अपने आराध्य प्रभु श्री राम की नरलीला का अद्भुत वर्णन किया है । नरलीला होगी तो मनुष्य के सभी भावों का प्रकटीकरण भी होगा। और रस श्रेष्ठ श्रृंगार की महति दशा विरह की व्यंजना भी मानव जीवन का एक अंग है । तुलसी रति भाव पर नहीं आते पर विरह की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हुए सम्पूर्ण रामकथा में विरह का एक ऐसा बिम्ब निर्मित कर देते हैं की पाठक साधू-साधू कह उठता है ।

हिंदी साहित्य के शशि, भक्तिकाल के सगुणभक्ति राममार्गी काव्यधारा के अन्यतम भक्त महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस रच कर न केवल साहित्य को बल्कि समाज को भी एक अद्भुत, अविस्मर्णीय मणि प्रदान की । भाषा, शब्द, शैली तो जैसे तुलसी बाबा के पीछे-पीछे उनकी राम भक्ति में रम गये। रामचरित मानस का आधार नर-लीला है । राम मात्र ईश्वर नहीं हैं वो मानव बनकर उसके सभी रूपों में प्रकट होते हैं, जीवन-रस के सभी रूपों का आस्वादन करते हैं । "उनके सभी पात्र उसी प्रकार हाड़-मांस के जीव हैं, जिस प्रकार काव्य का पाठक, परन्तु फिर भी उनमे अलौकिकता है ।........जीवंत पात्र सिर्फ श्वास-प्रश्वास ही नही लेते, सिर्फ हमारी भांति नाना प्रकार की संवेदनाओं को ही नहीं अनुभव करते, बल्कि वे आगे बढ़ते हैं, पीछे हटते हैं, अपनी उदात्त वाणी और स्फूर्तिप्रद क्रियाओं से हमारे अंदर ऊपर उठने का उत्साह भरते है, हमे साथ ले लेते हैं, हम उनका संग पा जाने पर उल्लसित होते हैं, उमंगते हैं और सन्मार्ग पर चलने में जो विघ्न बाधाएं आती हैं उन्हें जितने का प्रयास करते हैं ।"

मनुष्य के जीवन में सभी संवेदनाओं में श्रृंगार का अपना स्थान है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपने ग्रन्थ चिंतामणि भाग-1 में लिखते हैं, "यही के ऐसा भाव है जिसकी व्यंजना हंसकर भी की जाती है और रोकर भी; जिसके व्यंजक दीर्घ निःश्वास और अश्रु भी होते हैं तथा हर्षपुलक और उछल-कूद भी ।.....साहित्य के आचार्यों ने इससे श्रृंगार के दो पक्ष कर दिए है- संयोगपक्ष और वियोगपक्ष। कोई और भाव ऐसा नही है जो आलंबन के रहने पर तो एक प्रकार की मनोवृत्तियां और चेष्टाएं उत्पन्न करे और न रहने पर बिलकुल दुसरे प्रकार की ।......मनुष्य की अंतर्वृत्तियों पर लोभ या प्रेम शासन का यही दीर्घ विस्तार देखकर लोगों ने श्रृंगार को 'रसराज' कहा है ।" रसराज का वियोग पक्ष साहित्य में अपना स्थान रखता है । श्री राम की स्थापना तुलसी जी मात्र ईश्वर के रूप में भी कर सकते थे, पर नहीं उन्हें मानव बहुत प्रिय है, और राम के तो वे दास हैं । अतः भाषा के प्रवीण तुलसी जी ने मानव और ईश्वर का समन्वय खड़ा कर दिया । एक ऐसा रूप जो है तो ईश्वर पर परिस्थितिजनक आदर्श व्यवहार निरुपित करता है । वो हँसता है, प्रेम करता है, उसे क्रोध आता है, वो रोता है । डॉ सत्येंद्र, निबन्ध-निलय, डॉ रामविलास शर्मा अपने निबंध "तुलसी-साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य" में रेखांकित करते हुए कहते हैं "तुलसी की भक्ति मानववाद में डूबी हुई है। यह कवि मनुष्य का सबसे बड़ा उपासक है । तुलसी ने प्राचीन महाकाव्यों की मानववादी परम्परा को आगे बढाया है ।....जब भरत चित्रकूट जाते हैं तब बादल उन पर छाया करते चलते हैं, शीतल हवा चलती है और राम को भी मार्ग वैसा सुखद नहीं होता जैसे भरत को और अंत में वह स्पष्ट कह देते हैं –

" मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा ।
राम तें अधिक राम कर दासा ।"

परम विद्वान रामस्वरूप चतुर्वेदी जी ने "हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास" में स्पष्ट ही लिखा है कि "ईश्वर में पूरी आस्था और मनुष्य का पूरा सम्मान ये दोनों दृष्टियाँ तुलसी में एक दुसरे से जुड़ी हुई हैं । सिया-राममय सब जग जानी । करहुं प्रनाम जोरि जुग पानी ।' जैसी पंक्तियाँ इस गहरे आत्मविश्वास पर ही लिखी जा सकती हैं, जहाँ ईश्वर और मनुष्य दोनों की एक साथ प्रतिष्ठा हो । सिया राम यदि उनकी भक्ति के लिए आश्रय-स्थल हैं तो सब-जग उनके रचना कर्म के लिए ।" और जब मनुष्य है तो उसे वेदना की अनुभूति भी है, यह अनुभूति जितनी तीक्ष्ण होगी उसकी दृष्टि उतनी तीव्र । शेखर: एक जीवनी उपन्यास की भूमिका में अज्ञेय यही तो कहते हैं, " वेदना में एक शक्ति है जो दृष्टि देती है । जो यातना में है, वह द्रष्टा हो सकता है ।" राम को सब प्रिय हैं, राम सबको प्रिय हैं । प्रीति, भक्ति और दास्य-भाव का ऐसा अद्भुत समन्वय तुलसी ही कर सकते थे । आचार्य द्विवेदी लिखते हैं, "तुलसीदास के काव्य की सफलता का एक और रहस्य उनकी अपूर्व समन्वय-शक्ति में है । उन्हें लोक और शास्त्र दोनों का बहुत व्यापक ज्ञान प्राप्त था ।"
और जिस राम को कभी दु:ख का अनुभव भी नही हुआ था :

करुनामय मृदु राम सुभाऊ ।
प्रथम दीख दुखु सुना न काऊ ।।
(2/39, अयोध्याकाण्ड)

वह राम सीधे अपने प्रियों में सर्वोपरि पिता को अत्यंत दु:खद स्थिति में देखते हैं, माता कौशल्या से अलग होते हैं, भाई भरत को विदा समय देख तक न पाते हैं, अयोध्यावासियों के आँखों में अश्रु उन्हें देखना पड़ता है। वे नहीं चाहते की उनका दु:ख बढे तो वे सुमंत से "बिना छाप छोड़े" रथ चलाने को कहते हैं, प्राणप्रिया सीता को खो देते हैं, लक्ष्मण को शक्ति लगने पर रो देते हैं । इधर अयोध्या में महाराज दशरथ राम-वियोग में प्राण त्याग देते हैं, अयोध्या के पंक्षियों, पशुओं तक को वियोग ग्रस लेता है । रीतिग्रन्थकार सैय्यद गुलाम नबी रसलीन अपने ग्रन्थ रसप्रबोध में वियोग श्रृंगार के दस दशाओं अर्थात अभिलाष, चिंता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता, मरण का वर्णन करते हुए लिखते हैं -

धरे बियोग सिंगार मैं कवि जो दसादस ल्याइ। लच्छन सहित उदाहरन तिनके सुनहु बनाइ॥987॥
मिलनचाह उपजै हियै सो अभिलाष बखानि।पुनि मिलिबे को सोचु कौ चिंता जिय में जानि॥988॥
लखै सुनै पिय रूप कौ सौरे सुमिरन सोइ।पिय गुन रूप सराहिये वहै गुन कथन होइ॥989॥
सो उद्वेग जो बिरह ने सुखद दुखद ह्वै जाइ।बकै और की और जो सो प्रलाप ठहिराइ॥990॥
सो उनमाद जो मोह ते बिथा काज कछु होइ। कृसता तन पियराइ अरु ताप व्याधि है सोइ॥991॥
जड़ता बरनन अचल जहँ चित्र अंग ह्वै जाइ। दसमदसा मिलि दस दसो होत बिरह तें आइ॥ 992॥

राम का अपने सभी प्रियों से, और राम को प्रेम करने वालों का राम से इस नर-लीला में वियोग हुआ है । तुलसीदास जी को लोक का बड़ा ध्यान था अपनी रचना-प्रक्रिया में उन्होंने सदैव इन मानकों का ध्यान रखा ।

तुलसी बाबा ने वियोग की दसों दशाओं का बड़ा मार्मिक वर्णन किया है, इस वर्णन में कहीं भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया है । आचार्य शुक्ल ने सही ही कहा है, "सब रसों की सम्यक व्यंजना उन्होंने की है, पर मर्यादा का उल्लंघन कहीं नहीं किया है । प्रेम और श्रृंगार का ऐसा वर्णन जो बिना किसी लज्जा और संकोच के सबके सामने पढ़ा जा सके, गोस्वामी जी का ही है ।"

वियोग की इन दशाओं के वर्णन में हम क्रमशः एक-एक दशा को देखें तो तुलसीदास जी की भक्ति, सेवा और दास्य भाव के साथ उनके रचना उद्देश्य और रचना प्रक्रिया का अतुलनीय समन्वय दिखायी देता है ।

पहली दशा है अभिलाष अर्थात मिलन की इच्छा – अरण्यकाण्ड में प्राणों से प्रिय सीता को ढूंढते हुए श्री राम कहते हैं -

किमि सहि जात अनख तोहि पाहीं । प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं ।।
एहि बिधि खोजत बिलपत स्वामी । मनहुं महा बिरही अति कामी ।। 8/30 ।।(अरण्यकाण्ड)

(तुमसे यह स्पर्धा कैसे सही जाती है ? हे प्रिये तुम शीघ्र प्रकट क्यों नही होती ?)

अभिलाष के पूर्ण न होने पर मिलन के उपायों की चिंता प्रकट होती है, किष्किन्धाकाण्ड में वर्षा की समाप्ति होने पर भी सीता की कोई सूचना न पाकर प्रभु श्री राम, अपने प्रिय भाई लक्ष्मण से कहते हैं -

बरषा गत निर्मल रितु आई । सुधि न तात सीता कै पाई ।।
एक बार कैसेहुँ सुधि जानौं । कालहु जीति निमिष महुं आनौ ।। 1/18 ।।
कतहूँ रहउ जौ जीवति होई । तात जतन करि आनउं सोई ।।
सुग्रीवहूँ सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोस पुर नारी ।। 2/18 ।।(किष्किन्धाकाण्ड)

जब मिलन न सम्भव जान पड़े तो मानव मन स्मृतियों में चला जाता है । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी कहते हैं “अतीत की स्मृति में मनुष्य के लिए स्वाभाविक आकर्षण है । अर्थ-परायण लाख कहा करें कि ‘गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या फायदा’ पर हृदय नहीं मानता; बार-बार अतीत की ओर जाया करता है, अपनी यह बुरी आदत नहीं छोड़ता .....हृदय के लिए अतीत एक मुक्ति लोक है जहाँ वह अनेक प्रकार के बन्धनों से छूटा रहता है और अपने शुद्ध रूप में विचरता है ।”जब-जब राम को अयोध्या की याद आती है, उनके नेत्र जल से भर जाते हैं ।

जब जब रामु अवध सुधि करहीं । तब तब वारि बिलोचन भरहीं ।।
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई । भरत सनेहु सिलु सेवकाई ।।
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुखारी । धीरजु धरहिं कुसमउ बिचारी ।। (2/3।।141 अयोध्याकाण्ड)

स्मृति के बाद प्रिय के गुणों का वर्णन तो होना ही है, वही तो आलम्ब है, लंकाकाण्ड में भ्राता लक्ष्मण को शक्ति लगने पर प्रभु श्री राम एक मानव की भांति लक्ष्मण के गुणों को याद कर कहते हैं –

सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ । बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ।।
ममहित लागि तजेहु पितु माता । सहेहु बिपिन हिम आतप बाता ।।2।।
सो अनुराग कहाँ अब भाई । उठहु न सुनि मम बच बिकलाई ।।
जौ जनतेउँ बन बंधु बिछोहू । पिता बचन मनतेउं नहीं ओहू ।।3/61।। (लंकाकांड)

गुणकथन विरह वेदना को तीव्र कर ही देगा । इस स्थिति में कुछ भी अच्छा न लगेगा, यही तो उद्वेग दशा है। दशरथसुत रघुकुलनंदन मर्यादा पुरुषोत्तम अयोध्यावासियों को प्राणों से भी प्रिय थे,पहले तो उनका जाना सुनकर ही नगरवासियों ने माता कैकेयी को खूब कोसा, पर जब प्रभु श्री राम जिनकी पैंजनी का स्वर अयोध्या के लिए वीणा से भी बढकर था, जब वो वन चले गये तो महाकवि कविकुल शिरोमणि तुलसीदास उस दशा में लिखते हैं –

सबहीं बिचारु कीन्ह मन माहीं । राम लखन सिय बिनु सुखु नाहीं ।।
जहाँ राम तहँ सबुइ समाजू । बिनु रघुबीर अवध नहीं काजू ।।3\83 ।। (अयोध्याकाण्ड)

यह उद्वेग धीरे-धीरे मानसिक अवस्था पर असर डालने लगता है और न जाने कब विरह का यह दंश प्रलाप तक जा पहुँचता है । सुंदरकाण्ड में माता सीता जी राक्षसी त्रिजटा से रात की बेला में कहती हैं –

आनि काठ रचु चिता बनाई । मातु अनल पुनि देहि लगाई ।।
सत्य करहि मम प्रीति सयानी ।सुनै को श्रवन सूल सम बानी ।। 2 /12 ।। (सुन्दरकाण्ड)

जब वियोग प्रलाप भी पार कर जाये तो विचार-शक्ति लुप्त होने लगती है । उन्माद की इस अवस्था को दर्शाते हुए लोक-नायक तुलसी दास जी उस राम को जो स्वयं साक्षात् ईश्वर हैं, जो हर जीव-निर्जीव के इहलोक और परलोक का पालक है, विचारशून्य बनाकर खग-मृग से सीता का पता पूछते हुए कहलवाते हैं :

हे खग-मृग हे मधुकर श्रेनी । तुम्ह देखी सीता मृगनैनी ।।
खंजन सुक कपोत मृग मीना । मधुप निकर कोकिला प्रबीना ।। 5/30।। (अरण्यकाण्ड)

विचारशक्ति के लुप्त होते ही व्याधि की स्थिति आती है, अतिशय दुर्बलता घेर लेती है । तुलसी बाबा के

महाकाव्य रामचरित मानस में इस अवस्था के दो अतुलनीय रूप अयोध्याकाण्ड में भरत और सुंदरकांड में माता सीता के रूप में परिलक्षित होते हैं । भरत की दशा –

देह दिनहूँ दिन दूबरि होई ।
घटइ तेजु बलु मुखछबि सोई ।।1/325।। अयोध्याकाण्ड

सीता की दशा -

देखि मनहि महुं कीन्ह प्रनामा । बैठेहिं बीति जात निसि जामा ।।
कृस तनु सीस जटा एक बेनी । जपति हृदयं रघुपति गुण श्रेनी ।।4 /8।। (सुन्दरकाण्ड)

व्याधि, जड़ता के पास ले जाती है, अचानक से चौंक जाना, स्थिर मन न होना यह इसके लक्षण हैं। महाराज दशरथ जब राम के वियोग में सभा में भूमि पर बैठे हैं, जिन्हें राम की स्मृतियाँ ही जीवित रखे हुए हैं, उनकी दशा जड़ता का अन्यतम उदाहरण है ।

लेत सोच भरि छिनु छिनु छाती । जनु जरि पंख परेउ संपाती ।
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह राम लखन बैदेही ।। 4 /148 ।। (अयोध्याकाण्ड)

और जो जड़ है वह मृत्यु के समीप है । यह वियोग की अंतिम दशा मरण है ।

राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम ।। 155।। (अयोध्याकाण्ड)

(राम-राम कहकर , फिर राम कहकर, फिर राम राम कहकर और फिर राम कहकर राजा श्रीराम के विरह में शरीर त्याग कर सुरलोक को सिधार गये ।) रामचरित मानस जैसा महाकाव्य भक्ति की चरम अवस्था है, नर-लीला में राम सबके अपने हैं, ऐसा कौन है जिन्हें उनका विछोह नही सालता, कथा के अंत में तो प्रभु सबको मिल ही जाते हैं वापस आ जाते हैं, एक मात्र दसरथ ऐसे हैं जो बिछुड़ जाते हैं। यदि राम को यह विरह रूपी वनवास न मिलता तो वह लोक-दृष्टि एक राजपुत्र में जिसने कभी दुःख देखा ही नही था शायद न आ पाती ।

अंत में अज्ञेय के ये शब्द,".....और अगर पढायी जाए तो राम को किस रूप में प्रस्तुत किया जाये - स्वयं परब्रह्म के रूप में अथवा अवतारी रूप में अथवा साधारण मानव रूप में अथवा इतिहास के रूप में -पूरी रामायण को किस दृष्टि से देखा जाये, केवल एक पुरानी कथा के रूप में अथवा इतिहास के रूप में अथवा किसी दुसरे स्तर के, गूढ़ स्तर के सत्य के मंजूषा के रूप में? वास्तव में इनमें से कोई भी रूप या व्याख्या किसी दुसरे रूप का खंडन या प्रत्याख्यान नहीं है । इसी में राम कथा की शक्ति और महत्ता है ।वह एक साथ सभी स्तरों का निर्वहन कर रही है, इसीलिए वह जातीय स्मृति की मंजूषा है और जातीय सम्पत्ति है ।"

हास्य-वीथी

जिन्ह मोहि मारा ते मैं मारे

लेखिका – अनु

हमारे गांव के मुन्शी चाचा की बतकही बहोत मशहूर है, जिस दुआरी पर शाम में बैठ जाएंगे वहां हर उम्र का जमावड़ा हो ही जाएगा। रामायण,महाभारत आदि अनेक ग्रन्थों को उनकी बोली में सुनने का आनन्द ही कुछ और था। एक दिन लगे रामचरित मानस के सुन्दरकाण्ड को बताने। सुनिए उनकी बोली में--

अरे त भईया जब हनुमान जी राम जी से आज्ञां लेके लंका पहुंचलें अ सीता जी से अशोक वाटिका में मिल के आशिर्वाद ले लिहलें ओकरी बाद से उनके लग गईल भूख, देखलें कि एतना सुन्दर बगइचा,एक से एक फल, फूल भूखिया बढ़त जात रहे त कहलं कि "माता आदेश द बहुत भूख लगल बा तनी पेटवो भर जाई घुमियो लेइब, सीता जी कहलीं कि "ना बेटा बहुत भयावन व ताकतवर राक्षस कुल बाटं एहीजा तोहके मार डलीहें । अब त भईया हनुमान जी के भीतर मचल कुलबुली, कहलं कि माता बस आज्ञां देईं । आज्ञां पाके अशोक वाटिका में घुम -घुम पेड़-पालो उखाड़े लगलें, खाए लगलें, अ जउन राक्षस पहरेदरवा कुल रोकलअं कि ना उनके धई के दोहर घललअं,चललअं कुल भाग, जाके रावण के बतवलअं ,कि एगो बानर आईल बा वाटिका उजाड़त बा, रवणवां अपने औरी लोगन के फिर लइका के भेजलस त मार घललअं फिर गोसिया के अपने भयवा मेघनाद के भेजलस इनहुं क हालत खराब, राम जी की किरपा से हनुमान जी के राक्षस कुल का कर पवतअं । ए भयवा,जेतने कुल जाएं न त चाहे घाही हो जाएं चाहे खतम क घालें।

अब त मेघनदवा के बरल गोस्सा, रवणवां के आदेश से ब्रम्हास्त चलइबे त कईलस, अब हनुमान जी सोचलं कि ब्रम्हास्त्र से ना गिरथ हईं त एकर अपमान होई,चुपचाप गिर गईलअं, फिर कुल पकड़ के ले अईलें रावण की लग्गे। पूछलस रवणवां कि "बानर होके तु एतना उत्पात मचवले ह, हनुमान जी कहलअं कि अरे हजूर हम हईं बानर, लगल ह भूख त कुछ खईलीं हं, अ कुछ बानर होखले की नाते पेड़-पालो तोड़ दें लीं हं, अउरी जे हमके मरलस ओके मरलीं ।

खैर कुल बहुत कहा सुनी भईल त रवणवा कहलस कि बानर क पूछिए कुल होला एही मे आग लगा दीहल जा, हनुमान जी मुस्किआ के समझ गईलं कि माई शारदा काम त क देहली। नगर क कुल कपड़ा,घी, तेल खतम हो गईल पूंछ बांधे में, अ जइसहीं आग लगावल गइल पूंछे में कि ना, हनुमान जी सोने के बनल लंका नगरी के एक-एक छते प कूदे लगलें, मचल हल्ला, मय रक्षसवा , मेहरारू, लईका हाहाकार करे लगलें, लंका धू-धू जरे लगल, राक्षसी कुल कहें लगलीं कि इ त बानर नाईं बा कउनो देवता बा, साधु क अनादर भईल, बड़ा जुलुम भईल ए दादा, लंकावासी त्राहि-त्राहि कके हाथ जोड़े लगलं के अब कहीं फोटो में भी बानर देखल जाई त दूरवे से गोड़ लागल जाई।

अ सबसे बड़ बात इ समझअ ये भईया कि जेकरे उपर राम जी क हाथ ओकर कबो न बिगड़े काज। कहले क मतलब कि लंका जर गईल बाकी विभिषण के घर पर आंच ना आईल काहें कि उ राम जी क पुजारी न रहलअं । त भईया जे अपने परिवार, समाज, कुल के मर्यादा में रही,जे संस्कार, सभ्यता, धर्म, कर्म के समझी उहे न राम क भक्त रही।

त भईया हनुमान जी के एतहत बड़ आशिर्वाद बा कि राम जी के मनावें के होंखे त इनही क नाम ले ल बेड़ा पार हो जाई।

राम -सीता संवाद

कार्टूनिस्ट कृतिका सिंह जी लखनऊ की युवा कार्टूनिस्ट हैं, जीवन के विविध पक्षों पर आपके सीधे हस्तक्षेप करते कार्टून बहुत लोकप्रिय हैं, आप कृतिका जी को उनके फेसबुक पेज Kritika cartoonist(https://www.facebook.com/cartoonistkritika?mibextid=ZbWKwL) पर फॉलो भी कर सकते हैं

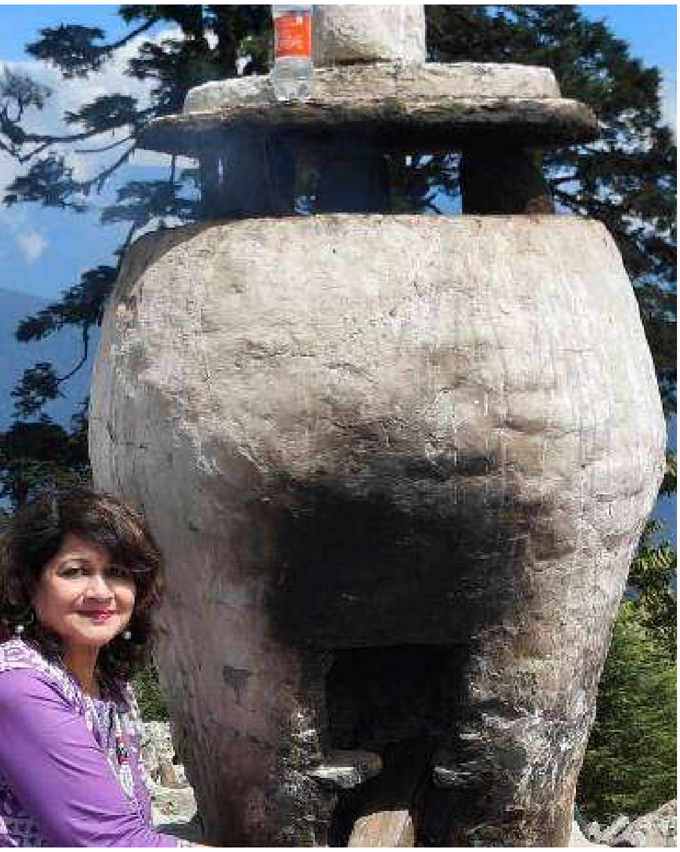

भूटान यात्रा : संस्मरण

डॉ नमिता राकेश
वरिष्ठ साहित्यकार एवं राजपत्रित अधिकारी

ख़ैर साहब, रास्ते मे रुकते-रुकाते खाते-पीते हम सब चार से पांच घण्टे की यात्रा कर के देर रात भारत भूटान सीमा पर जयगांव पँहुच गए। वहां पर परमिट और इमिग्रेशन ऑफिस था। टूर ऑपरेटर के एकाध साथी मौजूद थे जिनकी देखरेख में हम सभी का इमीग्रेशन किया गया। सिर्फ हमारे दो साथियों के डॉक्युमेंट में कुछ कमी पाई गई जिसकी वजह से उन्हें भूटान में प्रवेश नहीं मिला औऱ उन्हें भारत की सीमा पर जयगांव ही रुकना पड़ा। हम सब फिर उसी बस से फुंतशोलिंग शहर के पास के होटल गाधेन पँहुचे जो पहले से बुक था। भूटान पंहुचने की खुशी सबके चेहरों पर साफ़ नज़र आ रही थी। वहां हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया। छोटे से परिचय सत्र के बाद रात का शानदार भोजन कर के हम सभी अपने अपने कमरों में आ गए।

अगली सुबह नाश्ते के बाद हमें थिम्पू के लिए निकलना था पर उस से पहले अपने उन दो साथियों को भी भूटान में प्रवेश कराना था। अगली सुबह हमसबने नाश्ता किया ही था कि पता चला कि हम सबके पासपोर्ट व इलेक्शन कार्ड परमिट ऑफिस में वेरिफाई होने हैं। चूंकि मैं पैरा मिलिट्री फोर्स से हूँ तो मुझे सबके पासपोर्ट चेक कर के टूर ऑपरेटर के साथी को सौंपने का काम सौंपा गया। सुरक्षा की दृष्टि से मैंने कहा कि हमारे दो साथी भी टूर ऑपरेटर के साथी के साथ जाएंगे क्योकि पास्पोर्ट व इलेक्शन कार्ड अत्यंत महत्वपूर्ण व सेंसिटिव डॉक्युमेंट होते हैं जो मैं किसी क़ीमत पर भूटानी टूर ऑपरेटर के सुपुर्द नहीं करना चाहती थी।

बारीक़ी से चेकिंग कर के व नाम फोन नम्बरों के साथ हमने एक लिस्ट बनाई औऱ मैंने टूर-ऑपरेटर के रिसीविंग के बाक़ायदा हस्ताक्षर लिए और उसे वो लिस्ट थमाते हुए मैंने फोटो भी खींची। यह सब मैंने सुरक्षा की दृष्टि से किया ताकि किसी तरह की गड़बड़ी की कोई गुंजाइश ही ना रहे। काफ़ी इंतज़ार के बाद परमिट की अन्य

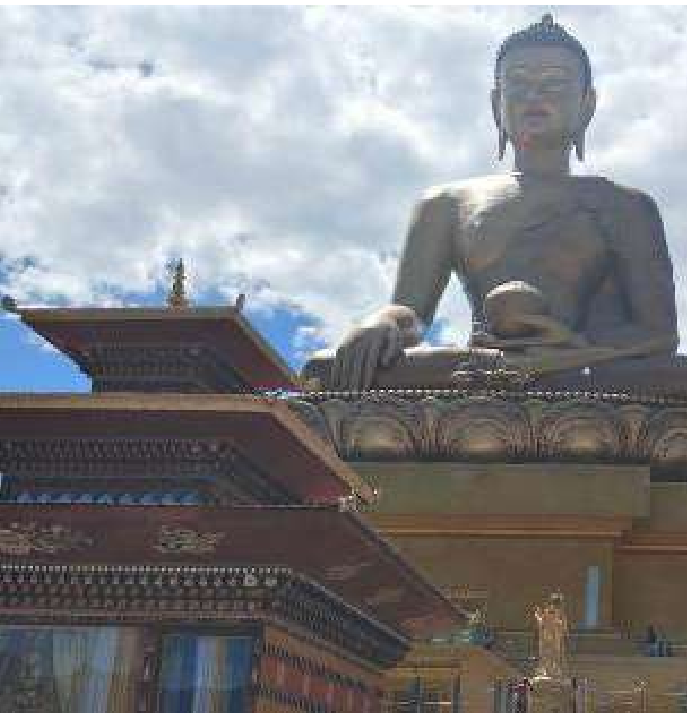

कार्रवाई पूरी हुई और हमारे उन दोनो साथियों के कागज़ भी वेरिफाई हुए ।इस सबमें दोपहर हो गई। जबकि हमें सुबह 9 बजे निकलना था। वहीं भोजन के लिए रुकने के बजाए हम सबने फिलहाल वहां से निकलना बेहतर समझा और रास्ते मे कहीं रुक कर भोजन करने का निश्चय किया। हम सब बार-बार की रुकावटों से पक चुके थे और जल्द से जल्द थिम्पू पंहुचना चाहते थे।

लेकिन एक बात यह कि फुंतशोलिंग से थिम्पू तक का सफ़र बहुत मज़ेदार था। हम इतने उत्साहित थे कि रास्ते भर अन्ताक्षरी खेलते औऱ हंसी मज़ाक के साथ प्राकृतिक नज़ारों का आनन्द लेते हुए कब थिम्पू के होटल कुबेर पँहुच गए यह पता ही नहीं चला। भोजन के बाद विश्व बंधुत्व में सोशल मीडिया की भूमिका पर संगोष्ठी रखी गई थी जिसमे हममें से कुछ लोग वक्ता थे और कुछ श्रोता।

यानी भ्रमण के साथ साहित्य सेवा भी हो रही थी। जिसके लिए आयोजक की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। सबका साथ सबका विश्वास की पृष्ठभूमि पर यात्रा आगे बढ़ रही थी। सब साथ-साथ थे और हिंदी भाषा के उत्थान के लिए एकजुट भूटान की धरती पर आपसी सौहार्द और भाईचारे की भावना से एकसाथ यात्रा का आनन्द उठा रहे थे। अलग-अलग राज्यों से आए सभी प्रतिभागी अब मानो एक परिवार के सदस्यों की तरह आपस में घुल मिल चुके थे।

अगले दिन हम सभी बढ़िया नाश्ता कर के दो बसों में भूटान की राजधानी थिम्पू के स्थानीय दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए निकल पड़े। दो चूल्हा पास पँहुच कर हम वहां के नज़ारों में खो गए। पहाड़ों को चूमते नीले-नीले बादल और दूर तक फैली हरियाली मानो हमारा ही इंतज़ार कर रहे थे। हम सबने हर एंगल से फोटो खिंचवाए। हम वहां की ख़ूबसूरती को अपने अपने कैमरे में क़ैद कर लेना चाहते थे। एक और दर्शनीय स्थल टॉकिंन ज़ू में हमें राष्ट्रीय पशु टाकिंन को भी देखने का अवसर मिला जिसका धड़ गाय और मुंह बकरी जैसा था। इस ज़ू में इस विलुप्त हो रही अनोखी जाति के संरक्षण का काम किया जाता है।

इसके बाद हमारा अगला पड़ाव बुद्धा मोनेस्ट्री था जहां बुद्ध की विशालकाय कांसे की गगनचुम्बी मूर्ति सबके आकर्षण का केंद्र थी। मौसम बहुत ही ख़ुशगवार था। नीला आसमान और सफेद बादल दूर तक फैली पर्वत श्रंखलाओं के बीच बुद्ध की प्रतिमा मानो मानव कौशल के झंडे गाड़ रही थी।

कुदरत और मानवीय कारीगरी की इस जुगल बंदी के हम सभी दर्शक ख़ुद को ख़ुशक़िस्मत समझ रहे थे। प्रतिमा के धरातल पर स्वर्ण युक्त दीवारें और बुद्ध की हर आकार की प्रतिमाएं देख कर हम सब मंत्रमुग्ध थे। यहां भी हम सबने एकल व सामूहिक फोटो सेशन किये। वहां से लौटते हुए हम सबने रॉड साइड दुकानों से भूटानी लाल हरे सेब व स्थानीय नमकीन खरीदा जो देखने मे भारतीय सेब की ही तरह था पर एक अलग ही मिठास से भरपूर था।

देर शाम हम सभी वापस होटल कुबेर पँहुचे। कुछ विश्राम के बाद कवि सम्मेलन में सब कवियों की भागीदारी थी। यानी भूटानी राजधानी में भारतीय कविताओं का परचम । ख़ूब आनन्द आया। होटल के अन्य विज़िटर व स्टाफ ने भी भारतीय कविताओं का ज़ायका लिया। बस फिर रात्रि भोजन के बाद अगले दिन घूमने के सपने संजोय हम सब कब नींद के आगोश में समा गए किसी को पता नहीं चला।

अगले दिन नाश्ते के बाद हम निकल पड़े पारो की ओर। दोनो बसों के हमारे साथी हंसते गाते बजाते रास्ते की ख़ूबसूरत वादियों का आनंद लेते बढ़ते गए। हम सबमे कलाकार साथी भी थे। बांसुरी वादक जब तान छेड़ देता तो कोई ढपली पर थाप देता तो कोई गीत सुनाने लगता। हम सभी खुले गगन के तले पिंजरों से आज़ाद पंछियों की मंनिन्द हर लम्हे को भरपूर जी लेना चाह रहे थे। उस आनन्द को शब्दों में बयान करना मुश्किल है। रास्ते में पारो नदी देखते ही हम सब उतर पड़े। नदी के हर कोण से हर लहर के साथ हमने फोटो खिंचवाई। वहीं की एक दुकान से हमने भांति-भांति के सामान खरीदे। नदी की रवानी और उसकी ठंडक अपनी आंखों में और बाहों में भरकर हम चल पड़े रिनपुंग किला और म्यूजियम देखने।

वहां पर भी सबने भूटानी पोशाक "कीरा" पहन कर खूब फोटो खिंचवाई, रील बनाई और भूटानी नृत्य किया। पारो के नेशनल म्यूज़ियम में ऐतिहासिक कलाकृतियां, पारम्परिक वेशभूषाएं, बर्तन, हथियार, मूर्तियां इत्यादि संग्रहित हैं। रिनपुंग किले से प्रशासनिक कार्य किये जाते हैं। वहीं पास में कोर्ट भी स्थित है। इतना घूमने के बावजूद किसी को कोई थकान नहीं थी।

देर शाम होटल में ही आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में सबने अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन किया। नृत्य, गीत, एकल अभिनय, सामूहिक नृत्य इत्यादि भिन्न-भिन्न रंगों से सजी महफ़िल का सबने ख़ूब लुत्फ़ उठाया।

अगले दिन हमारे कुछ साथियों को प्रसिद्ध पर्यटक स्थल टाइगर नेस्ट जाना था। उसी शाम इंडो भूटानी सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी होना था। टाइगर नेस्ट ऊंची पहाड़ी पर स्थित एक दर्शनीय स्थल है। जिसकी चढ़ाई बहुत दुर्गम है। सब बस का इंतज़ार कर रहे थे लेकिन टूर ओपरेटर की ओर से कोई सूचना नहीं मिल रही थी। दिन खिसकता जा रहा था। आखिर बहुत जद्दोजहद के बाद जाकर बस आई। कुछ साथी टाइगर नेस्ट के लिए बस से चल पड़े और कुछ होटल में ही सांस्कृतिक संध्या की तैयारी के लिए रुक गए।

इससे पहले कि मैं आगे बढ़ूं, एक घटना का ज़िक्र किए बिना ख़ुद को रोक नहीं पा रही। वो यह कि भूटान की यात्रा के बहुत पहले से हम सभी भूटान में सोना यानी गोल्ड सस्ता होने के कारण खरीदारी का प्लान बना रहे थे और बहुत उत्सुक भी थे। टूर ऑपरेटर से भी जानकारी ले रहे थे। पर हममें से कुछेक ही अपने साथ गोल्ड खरीदने के लिए एक्स्ट्रा कैश ले कर गए थे। बाकियों ने इस झंझट से मुक्त रहना और सिर्फ घूमने पर ही अपना फ़ोकस रखना बेहतर समझा।

तो जब हम पारो घूमने निकले तो हमसे से एक महिला और कुछेक पुरुष गोल्ड की खरीदारी के लिए भी पारो स्थित बाज़ार में दुकानों से पूछताछ करते नज़र आए। हमें शॉपिंग के लिए आधा घण्टे का समय दिया गया था क्योंकि बाकी पर्यटन स्थलों पर भी जाना था।

नियत समय के पश्चात थोड़ी बहुत शॉपिंग कर के हम सब अपनी-अपनी बसों में बैठ गए। तभी किसी ने नोटिस किया कि हमारे दो साथी मिसिंग हैं यानी बस में नहीं हैं। फटाफट फोन किए गए जिसमें से एक ने फोन पर बात करने के बाद जल्द ही बस तक पंहुचने की बात कही। उस सदस्य के आने पर पता चला कि वो और एक हमारी एक महिला साथी किसी दुकान पर गोल्ड खरीदने रुक गए थे। उस

दुकान पर पता चला कि गोल्ड खरीदने के लिए भारतीय करेंसी के स्थान पर डॉलर का ही इस्तेमाल वैध है । उस समय कोई बैंक आसपास नहीं था तो वो दोनों किसी दुकान में चले गए थे जिसने यह आश्वासन दिया कि वो रुपए के बदले डॉलर दे देगा। बातों-बातों में उसने उस महिला सदस्य से यह जान लिया कि उसके पास लगभग डेढ़ लाख भारतीय मुद्रा हैं ।

उसने उस महिला को कुछ देर उसी की दुकान में इंतज़ार करने को कहा। वो महिला मान गई। जबकि साथ के पुरुष को कुछ दाल में काला लगा। उसने इशारों में उस महिला साथी को समझाया और वहां से चलने को कहा लेकिन महिला ने उस पुरुष साथी की बात को नज़रअंदाज़ कर दिया। पुरुष साथी ने कहा कि उसका कैश बस में दूसरे साथी के पास है जिसे वो लेने का बहाना कर के दुकान से निकल गया। जब हम सबको यह पता चला तो हम सब सकते में आ गए। फौरन उस महिला को फोन किया गया पर उसका फोन बंद पाया गया। वो पुरुष साथी हमारी बस का था और वो महिला दूसरी बस की थी। फौरन दूसरी बस के लोगों को सम्पर्क कर के स्थिति बता कर उस महिला और उस दुकान का पता लगाने को कहा गया। तब तक हमारी बस चल चुकी थी। आख़िरकार बहुत मुश्किल से उस महिला को ढूंढा गया और बस में लाया गया तो सबकी जान में जान आई। उस महिला का कैश उस के पास था क्योंकि वो दुकानदार भांप चुका था कि यह महिला अकेली नहीं है।

खैर कुछ लोग शाम को होने वाले इंडो भूटान सांस्कृतिक संध्या और पुरस्कार समारोह की तैयारी में लग गए। कुछ लोग जिन्हें अपने पैरों की शक्ति और ख़ुद पर भरोसा था वो भूटान के जग प्रसिद्ध पर्यटन स्थल टाइगर नेस्ट के लिए बस से रवाना हो गए । मैं अपने कुछ साथियों के साथ स्थानीय बाज़ार घूमने निकल पड़ीं । मैंने कुछेक ज्वेलरी सेट्स, मैग्नेट जिन पर भूटान के पर्यटक स्थलों की तस्वीर थी जिन्हें फ्रिज या अलमारी पर चिपकाया जा सकता है, दो सेट्स भूटानी ट्रेडिशनल पोशाक "कीरा" के भी लिए। इन्हें मैंने खुद पहन कर पहले ट्राई किया । अच्छा लगने पर ही खरीदा। बहुत से माले, गाड़ी में लटकाने वाले शो पीसेस मैं पहले ही ख़ूबसारे ले चुकी थी। अपने मित्रों व रिश्तेदारों को भूटान की सौगात जो देनी थी।

बस फिर हम वहाँ से होटल लौट आए। देखा कि कार्यक्रम की तैयारी लगभग पूरी हो चुकी थी। इस कार्यक्रम का संचालन मुझे ही करना था। आयोजक ने मुझे तैयार हो कर हाल में पंहुचने को कहा। समय कम था सो मैं फ़टाफ़ट तैयार हो कर हॉल में पँहुच कर स्टेज संभालने में मुस्तैदी से जुट गई।

कार्यक्रम में भारत के कोने-कोने से आए कलाकारों और कवियों ने एक से एक बढ़ कर प्रस्तुतियां दीं। वहीं भूटानी कलाकार विशेषकर महिलाएं व लड़कियां भी कुछ कम नहीं थीं। उन्होंने एक से एक बढ़ कर नृत्य व गीत प्रस्तुत किए। उन गीतों में भारतीय फिल्मी गीतों की भरमार थी। उनके भूटानी एक्सेंट में हिंदी गीत सुनकर हम सभी बहुत खुश हुए। भूटानी और भारतीय कलाकारों के एकल, सामूहिक गीतों, नृत्यों, बांसुरी वादन और लघु नाटिका की दमदार प्रस्तुतियों ने विश्व बंधुत्व की भावना को और भी प्रबल कर दिया। वहीं मेरे बंधे हुए कुशल व चुटीले संचालन की हरेक ने दिल खोल कर प्रशंसा की। इस आयोजन के लिए आयोजकों की जितनी तारीफ़ की जाए उतनी कम है। कार्यक्रम की शुरुआत सदाबहार मोटिवेशनल गीत इंसान का इंसान से हो भाई चारा से हुई और समापन प्रसिद्ध गीत ज़िंदगी प्यार का गीत है से हुआ। सम्मान समारोह में सभी कलाकारों और कवियों को अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न इत्यादि से सम्मानित किया गया। कुल मिला कर देर रात चले इस कार्यक्रम के बाद सबके चेहरों पर एक सन्तोष मिश्रित विजयी मुस्कान तैर रही थी। विदेशी भूमि पर सम्मानित होना अपने आप में महत्वपूर्ण होता है।

अगला दिन वापसी का दिन था। सुबह के नाश्ते के बाद सभी अपना अपना सामान ले कर चेक आउट कर् के होटल की लॉबी में बसों का इंतज़ार करने लगे। अब भारत की याद सताने लगी थी। अपना देश अपना घर अपना परिवार याद आ रहे थे।

내일은 없어

युन डाँग जु

ने ई लु न अ प्त दा

30 दिसंबर, 1917 को मंचूरिया, चीन में जन्मे युन ने गीत काव्य लिखा और कोरियाई प्रायद्वीप पर जापानी कब्जे के दौरान कोरियाई लोगों के लिए आवाज प्रदान की। लेखन में उनकी प्रतिभा छोटी उम्र से ही चमक उठी ।

"वहाँ कोई कल नहीं है" कविता प्रतीकात्मक संदेश देने के लिए कोरियाई भाषा की सादगी और पवित्रता का उपयोग करती है। महामारी के इस अभूतपूर्व समय में कई लोगों के मन में ये पंक्तियाँ इस भावना के कारण गूंजती हैं कि यह स्थिति लंबे समय तक चलने वाली और निराशाजनक है।

अनुवादक - डॉ. सुधांशु लाल
कोरियन भाषाविद

अनुवाद :-

कल नहीं आता (कोई कल नही)
[एक नव युवक का प्रश्न]
वे हमेशा कहते हैं -कल, कल
मैंने पूछा उनसे कब आएगा ये कल
वे कहते हैं -रात चाटेगी दिन निकलेगा
तब आयेगा ये कल
इस कल को मैंने खुद से दौड़ना चाहा
जब जागा और आस पास नज़र दौड़ाया
मैंने कोई कल नहीं पाया
बल्कि जो पाया वो आज ही पाया
जो की आ चुका है

मेरे दोस्तों
कल नहीं आता

내일은 없다
— 어린 마음이 물은

내일 하기에
물었더니
밤을 자고 동틀 때
내일이라고

새날을 찾던 나는
잠을 자고 돌아보니
그때는 내일이 아니라
오늘이더라

무리여! 동무여!
내일은 없나니

"जन मन को अति प्यारे राम"

दयाशंकर तिवारी जी
काव्य मर्मज्ञ
वरिष्ठ साहित्यकार, मऊ

लछिमन सीता संग गये
बन दशरथ राज दुलारे राम।
केवट उतराई भरपाई
भव से पार उतारे राम।
जूठे शबरी बेर भी खाये
नारि अहिल्या तारे राम।
मित्र बना सुग्रीव पवन सुत
बालि को पहुंचाये सुरधाम।

गीधराज को गोद में लेकर
अविरल अश्रु बहाये राम।
अनगिन राक्षस रावण बध कर
महि का भार उतारे राम।
लंका राज विभीषण को दे
रघुकुल रीति निभाये राम।
चौदह बरस बिता कर बन में
फिर से अवध पधारे राम।

पुलकित हुई अयोध्या नगरी
जन मन को अति प्यारे राम।
राम राम सर्वत्र राम मय
जब से राज सम्हारे राम।
दीन हीन जो दुखी पुकारें
मिलते बांह पसारे राम।
विपदा में भी नहीं बिसारें
देते सदा सहारे राम।

सब देखते रह जाएंगे

नमिता राकेश जी
वरिष्ठ कवियत्री,
राजपत्रित अधिकारी, नयी दिल्ली

हे राम !
तुम तो पुरुषोत्तम हो
जो तुम पर सवाल उठाएं
वो उत्तम कैसे हो सकते हैं
तुम्हारा नाम लेकर
जब पत्थर तैर जाते हैं
तो ये सवालिया लोग
क्यों नहीं तैर पाते ?
यानी-तर जाते ?
क्या ये लोग
पत्थर से भी ज़्यादा
पथरीले हैं ?
कहते हैं
रस्सी आवत जावत से
सिल यानी पत्थर पर
निशान पड़ जाते हैं
और पत्थरों की शिराओं में
दबी पड़ी नमी से भी
अंकुर फूटते देखे गए हैं
फिर ये लोग तो
पत्थर से भी ज़्यादा पथरीले होंगे
तभी तो
राम पर आस्था नहीं रखते
जब ये लोग
राम को जानते ही नहीं
तो भला मानेंगे कैसे
अरे
राम तो राम हैं
कोई उन्हें माने ना माने
जाने ना जाने
राम को फ़रक नहीं पड़ता
राम सारे सवालों से परे हैं
राम तो एक विश्वास हैं
कितने दिलों की आस हैं
श्रद्धा की सुवास हैं
एक अद्भुत इतिहास हैं
अब जब
राम अपने सिंहासन पर
विराजने वाले हैं
तो जाने कितनों के सिंहासन
डोलने लगे हैं
जो कबूतर उड़ाते थे
उनके हाथों के तोते उड़ने लगे हैं
उनकी सारी सांठ गांठ
कुत्सित चालें-कुत्सित योजनाएं
धरी की धरी रह जाएंगी
जब राम की सवारी आएगी
जब राम लला विराजेंगे
ढोल ताशे बाजेंगे
तब सब कुछ राममय हो जाएगा
जीवन सुरभित हो जाएगा
बस
राम ही राम होंगे
और कुछ नहीं
हमारी
ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के सरताज
मर्यादा पुरुषोत्तम राम
जब पूरे लावलश्कर के साथ
अयोध्या में पधारेंगे
तो बस
एक ही नाम सुनाई देगा
राम राम राम राम
जय श्री राम

राम

राम तुम प्रसंग से परे नहीं हुए कभी
अट्टहास रावणों के ध्वनित हो रहे अभी।

देव, दानव, मनुज के अब रूप दिखते एक हैं
भ्रमित, उद्वेलित व कुंठित नीतियों के श्लोक हैं
प्रतिस्थापित हो पुनः मर्यादा, पुरुष, उत्तम सभी
राम तुम प्रसंग से परे नहीं हुए कभी...

भाव-रस से सिक्त, मीठे, भीलनी के बेर चिन्हित
शैलरूपी है अहिल्या, धीर क्षीण है ना किंचित
नयन जोहें बाट, पूरित अश्रु भी हैं स्नेह भी
राम तुम प्रसंग से परे नहीं हुए कभी...

युग फिरा, है ढीठ किंतु सिन्धु की लहर प्रबल
राह विस्मृत, ध्येय धूमिल, मन अचेतन है विचल
साध शर कोदंड, हो संधान मानस रोध भी
राम तुम प्रसंग से परे नहीं हुए कभी...

अविनाश पाण्डेय
रंगमंच निर्देशक, लेखक
वाराणसी

कहानी – !!ऐसा प्यार कहाँ!!

लेखिका :
प्रो. डॉ. रचना सिंह"रश्मि"
आगरा

बारिश होने की वजह से आज ठंड जादा थी सर्द हवा के साथ गलन से कंपकपी बढ़तीं जा रही थी चारों ओर पसरा सन्नाटा और धुंध रुक-रुककर कुत्तों के भौकनें की आवाजों ने रात को और डरावना बना दिया था।तेज कदमों से चलते नीरज ने कसकर मधु का हाथ अपने हाथ में पकड़ रखा था वह जल्दी से आटो स्टेंड पहुंचना चाहता था, वह मन ही मन प्रार्थना कर रहा था कि समय से स्टेशन पंहुचकर दिल्ली जाने वाली गाड़ी में बैठ जाए घड़ी पर नजर डाली रात के 3:15बज रहे थे मधु बस थोड़ा और तेजी से चलों मधु मन ही मन सतरंगी सपनों को साकार होते देख बहुत खुश थी अपनी शाल को खींचकर अच्छे से लपेटकर नीरज के साथ उज्ज्वल भविष्य की ओर कदम बढ़ा रही है। अंदर ही अंदर किसी अनहोनी की आशंका से घबरा रही थी। तभी सामने से पुलिस की जीप आते देख नीरज और मधु को लगा है पुलिस दोनों को पकडने आई है, यह सोचकर हाथ पैर कांपने लगे उसे लगा अब वह और मधु अलग न हो जाएं फिर ।

नीरज ने.हाथ दबाकर मधु को इशारा किया, अगले पल अपने आपको सम्भालतें हुए आराम से चलने लगा। रात के सन्नाटे को चीरती हुई हूटर बजाती पुलिस की गस्ती जीप की आवाज से कानो में पड़ी, जब तक नीरज और मधु कुछ समझ पाते तब तक जीप बगल में आकर रुकते ही एक कड़क आवाज आई, "ऐ रुको", मधु की चीख निकलते-निकलते रह गयी । नीरज के माथे पर पसीना आ गया सामने जीप से एक सिपाही उतरकर आया । "दरोगा जी पुछ रहे है इतनी रात में तुम दोनों सड़क पर क्या कर रहे.हो?" नीरज दरोगा जी के सामने हाथ जोड़कर चापलूसी के भाव बोला सरकार हम अपनी घरवाली के साथ दिल्ली जा रहे है, पांच बजे की गोमती ट्रेन पकड़नी है। सामने टैम्पो स्टेंड है बस वहीं से टैम्पो पकड़ने जा रहे है । "यह साथ में कौन है", जवाब दिया, "सरकार यह हमारी घर वाली है।" मधु ने यह सुनकर शाल को ठोड़ी से.और नीचे खीच लिया और हिम्मत कर के बोली,"साहब हमारी ट्रेन छूट जायेगी", सिपाही, "तुम चुप

रहो साहब ने तुमसे पूछा?” दरोगा जी नीरज का चहेरा ध्यान से देखते हुए बोले, “इतनी कड़ाके की सर्दी में तुम्हारे माथे पर पसीना!”, “सरकार हम मजदूर आदमी है मेहनत करते है पैदल चलकर आये हैं इसलिए पसीना है”, नीरज ने जेब में हाथ डालकर टिकट निकाल कर दरोगा जी को दिखा दी। दरोगा जी ने आश्वस्त होते हुए जीप स्टार्ट करने को बोला, इंजन की आवाज इतनी तेज और डरावनी लगी कि मधु नीरज से एकदम सटकर खड़ी हो गयी। नीरज मधु का हाथ पकड़कर तेजी से चलने लगा, वह जल्दी से स्टेशन पहुंचना चाहता था। एक आटो वाले को झकझोरते हुए बोला, “भाई घंटाकर चलोगे!”, आटोवाले ने कम्बल को खीचते हुए कहा, “सोने दो बहुत जोर की ठंड लग रही है। ”अब क्या होगा नीरज घड़ी देखते हुए बोला, “हमारे पास एक घंटा है मधु अगर आज नही जा सके तो हम कभी नही मिल पायेगें”

“भईया जरा चले चलो हमारी तबियत खराब है, कल दिल्ली के बड़े अस्पताल में डॉक्टर को दिखाना है, तुम्हारा बड़ा अहसान होगा” मधु ने बड़ी मासूमियत से बोला, कम्बल में पैरों को समेटते हुए आटो वाले ने पूछा, “क्या टाइम हुआ है?”, “पौने चार बजे हैं।”, “अच्छा रूको” आँखें मलते हुए आटो वाला उठकर कम्बल तय करते हुए बोला, “10 मिनट दो मै जरा हाथ मुँह धुल लूँ तब तक तुम सीट पर बैठो, लेकिन भाई किराए के अलावा 50 रुपया जादा चाहिए।“

“ठीक है भाई पर जल्दी चलो नही तो हमारी गाड़ी छूट जायेगी” नीरज ने राहत की सांस ली और मधु के साथ सीट पर बैठ गया। आटो वाला अपेक्षा से पहले ही आ गया और आटो स्टार्ट करने लगा नीरज मधु से और सटकर बैठ गयी, मधु की दिल की धड़कन बढ़ गयी बस कुछ देर और हम स्टेशन पहुंचने वाले है।

नीरज ने अपनी आँखें मधु की हिरनी सी कजरारी आँखो में झांकते हुए एक दूसरे में इतना खो गये कब रास्ता गुजर गया पता ही नही चला।

तभी आटो वाले ने आवाज दी, “लो भईया स्टेशन आ गया है”, “तुम एक नंबर पर उतार दो यह लो तुम्हारे किराया”, 250 रूपये देते समय नीरज ने धन्यवाद किया और भारी भरकम बैग कंधे पर टांगने लगा। आटो वाले ने 50 रुपये.वापस करते.हुएबोला मेरा किराया 200 रुपया था तुम शरीफ और जरूरतमंद हो रख लो जल्दी से नीरज टिकट दिखाकर गेट पर खड़े काले कोट वाले से पूछा, “गोमती कितने नंबर पर है!” उत्तर मिला, “चार नबंर पर लगी है”।

हाँफते हुए डिब्बे में मधु और नीरज चढ़ गये। अपनी सीट ढूंढने लगे, तभी सीटी की आवाज आई और गाड़ी प्लेटफार्म पर रेंगने लगी मधु ने भगवान का मन ही मन धन्यवाद किया।

“मधु इधर आओ, हमारी सीट ये रही” नीरज ने कहा। दोनो सीटें आमने-सामने थी, सामान रखकर दोनो ने राहत की साँस ली और ट्रेन ने रफ्तार पकड़ ली सर्दी बहुत थी सवेरे के छः बजने वाले थे लेकिन धुंध की वजह से अंधेरा छाया था तो लोग कम्बल और शालों मे सिमेट कर बैठें थे। लभगभ सभी सो रहे थे बाकी एक दो ऊँघ रहे थे।

(शेष कहानी अगले अंक में.......)